प्रस्तुतीकरण व्याख्यान

स्वीडिश पाठ से अनुवाद

प्रो0 इरके लुंडबर्ग, रायल अकादमी ऑफ साईंसेस द्वारा प्रस्तुतीकरण व्याख्यान।

महामहिम, प्रतापी महाधिराज, बहनों और भाइयों,

अभी तक अल्फरेड नोबेल की याद में समर्पित अर्थशास्त्र विज्ञान में पुरस्कार ऐसे अनुसन्धानकर्ताओं को दिये गये हैं जिन्होंने "विशुध्द" कहे जाने वाले अर्थशास्त्र में अग्रगामी योगदान किए हैं। यह पुरस्कार आरंभिक बिन्दु के रूप में सामान्य साम्यावस्था के सिध्दांत के साथ उच्च, अमूर्त स्तर पर आर्थिक सिध्दांत के कार्य के लिए, विभिन्न संबंधों की मात्रात्मक परिशुध्दता प्राप्त करने के उद्देश्य से सैध्दान्तिक माडलों के आधार पर विश्लेषक तकनीकों पर कार्य के लिए और अन्ततः दीर्घ तथा अल्प अवधियों के दौरान आर्थिक विकास के ऐतिहासिक-सांख्यिकीय विश्लेषण पर कार्य के लिए प्रदान किया गया है। किन्तु, सामाजिक विज्ञानों के क्षेत्र में ऐसे सुप्रसिध्द अनुसंधानकर्ता विद्यमान हैं जिनके हितों का क्षेत्र "विशुध्द अर्थशास्त्र" शब्द की तुलना में अधिक व्यापक है। ऐसे

सुप्रसिध्द अनुसन्धानकर्ताओं में इस वर्ष के पुरस्कार विजेता प्रो0 मायरडल और हेयक शामिल हैं।

प्रोफेसर मायरडल और हेयक दोनों ने अपने पेशे को आरंभ विशुध्द अर्थशास्त्रीय सिध्दांत में महत्वपूर्ण योगदान के साथ शुरू किया। उनका आरंभिक कार्य (1920 और 1930 के दशकों के दौरान) काफी सीमा तक समान क्षेत्र में था: व्यापार चक्र सिध्दांत और आर्थिक सिध्दांत। लेकिन उसके बाद, मायरडल और हेयक ने ऐसी समस्याओं का निपटान करने के लिए अपने क्षेत्र को काफी हद तक बढ़ा दिया। जिनका अध्ययन संकीर्ण आर्थिक ढांचे के अन्तर्गत नहीं किया जा सकता था। मायरडल और हेयक द्वारा अध्ययन की गई समस्याओं के क्षेत्र को बढ़ाने की आवश्यकता महसूस की गई और प्रणाली - विज्ञान को हेयक के निम्नलिखित उध्दाहरण में प्रभावी ढंग में व्यक्त किया गया: "लेकिन कोई भी अर्थशास्त्री एक महान अर्थशास्त्री नहीं बन सकता - और मैं तो यह कहे बिना भी नहीं रह सकता कि एक अर्थशास्त्री तब तक एक वास्तविक ख़तरा

नहीं बन जाता जब तक उसके कंटक बने रहने की संभावना बनी रहती है।"

यद्यपि इन दोनों अर्थशास्त्रियों ने अपने क्षेत्र के दायरे को विशुध्द आर्थिक समस्याओं से अधिक बढ़ा दिया है, लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि उन्होंने विकास की उसी लाईन का अनुसरण किया है। मायरडल ने अपना ध्यान मुख्यत: सामाजिक समस्याओं (व्यापक अर्थ में) विशेषत: यू.एस.ए. में हबशी (Negro) प्रश्न और अविकसित देशों में गरीबी के संबंध की ओर दिया है, उसने आर्थिक विश्लेषण के सामाजिक, जन सांख्यिकीय और सांस्थनिक (Institutional) हालात की ओर उच्च कोटि के साथ आर्थिक विश्लेषण का समाकलन करने का प्रयास किया है। हेयक ने अपने क्षेत्र को आर्थिक प्रणाली, मनोवैज्ञानिक और दार्शनिक विषयों तक बढ़ा लिया है ताकि व्यक्ति, संगठन और विभिन्न सामाजिक प्रणालियां काम कर सकें। दोनों ही विद्वानों ने आर्थिक नीति की समस्याओं में, समाज के संगठनात्मक, संस्थागत और कानूनी ढांचे में संभावित परिवर्तनों

सहित, गहरी दिलचस्पी दिखाई है। मायरडल ने यहां मूलभूत और अपरम्परागत सुधारों का समर्थन किया है, जबकि हेयक ने ऐसे तरीकों की तलाश की है जिनसे एक उदार, व्यक्तिपूकर रूप से सामाजिक प्रणाली की व्यवहार्यता को बढ़ाया जा सके। तथापि, यह राजनीतिक भेदभाव, सामाजिक विज्ञान अनुसंधान के बारे में समान अभिरुचि के पूर्णता अधीन है: यह धारणा कि हमारे युग के बड़े सामाजिक - आर्थिक प्रश्नों को अध्ययन की गई समस्याओं और प्रयोग में लाये गये प्रणाली विज्ञान के दायरे को विस्तृत किए बिना पूरी तरह से नहीं समझा जा सकता।

अपनी महान रचना अमरीकी दुविधा में मायरडल ने आर्थिक विश्लेषण को तत्वों और संबंधों की श्रृंखलाओं के अध्ययन में व्यापक सामाजिक विज्ञान पहुंच के साथ हबशी (Negro) समस्या और आधुनिक लोकतंत्र को ज्यादा महत्व दिया है जो हबशी जनसंख्या की स्थिति और विकास की संभावनाओं का निर्धारण कर सकती है।

अपने विश्लेषण में नीग्रो समस्या की सामाजिक स्थिति के समर्थन के लिए मायरडल ने आर्थिक साम्यावस्था माडलों और उपद्रवों के बाद के संचयी प्रक्रमों के गतिक विश्लेषण के लाभप्रद तरीके का प्रयोग किया है। वह बड़ी संख्या में आर्थिक और सामाजिक तत्वों के बीच अन्योन्याश्रय की ओर ध्यान ले जाता है और दिखाता है कि अधोगति के संचयी प्रक्रम 'दोषपूर्ण चक्र' कैसे उत्पन्न हो सकते हैं जिससे 'अन्तिम कारणों' के रूप में किन्हीं विशेष तत्वों की ओर इशारा करना अंसभव हो जाता है। वास्तव में मायरडल ने अपनी इस रचना में नीतिपूरक तत्वों का बहुफलकित तत्वों विश्लेषण प्राप्त किया है जो सारे अपूर्ण विकास (शिक्षा, स्वास्थ, निर्वाह स्थितियों, कार्य से संतुष्टि, नियोजकों और ट्रेड यूनियनों की ओर से भेदभावपूर्ण अभिरुचियों) को प्रभावित करता है, ऐसे तत्वों को 1960 के दशक तक अर्थशास्त्रीयों के विश्लेषणात्मक नमूनों में दर्ज नहीं किया गया था। यह पुस्तक एक गौरवग्रन्थ बन गई है और इसके अलावा जहां तक हबशी (Negro) समस्या का संबंध है गत

वर्षों के दौरान अमरीकी राय और नीतियों पर इसका असाधारण प्रभाव पड़ा है।

यह माना जा सकता है कि मायरडल का अविकसित देशों की समस्याओं के अध्ययन के लिए व्यापक योगदान काफी हद तक उसी पात्र का ही है जो एन अमेरिकन डिलेमा में था। इसके अलावा, यह व्यापक अर्थ में सामाजिक विज्ञान अनुसंधान का प्रश्न है, अनुसंधान जहां राजनीतिकरण, संस्थागत, जनसांख्यिकी, शैक्षणिक और स्वास्थ्य तत्वों के साथ बहुत महत्व जुड़ा हुआ है। बहुत सी बातों में मायरडल के विचार और अनुसंधान निष्कर्ष अविकसित देशों पर सार्वजनिक वार्तालाप के लिए महत्वपूर्ण हैं, उदाहरणार्थ, यह बेरोजगारी के स्वरूप और कारणों, विशेषत: भारत में, खेतीबाड़ी की अकुशलता की प्रकृति, किसी दत्ता देश में औद्योगिक विकास से अनावश्यक विस्तार के उन तरीकों से जिनसे उस देश के सांस्कृति, सामाजिक और आर्थिक स्तर और अन्तत: सामाजिक अनुशासन के महत्व प्रभावित होते हैं।

आर्थिक सिध्दांतों के क्षेत्र में हेयक का योगदान गहरी पैठ करने वाला भी है और वास्तविक भी है। 1920 और 1930 के दशकों में उसकी वैज्ञानिक पुस्तकों और लेखों के कारण एक अत्यन्त रोचक विचार विमर्श आरंभ हो गया था। विशेष रूप में उसके व्यापार चक्रों के सिध्दांत, आर्थिक और उधार नीति के प्रभावों के बारे में ध्यान आकृष्ट हुआ। उसने चक्रीय परस्पर संबंधों में और गहराई तक जाने की कोशिश की जैसा कि उस अवधि के दौरान होता था और अपने विश्लेषण में उसने पूंजी और ढांचागत सिध्दांत के विचारों का समावेश किया। आंशिक रूप से व्यापार - चक्र के विश्लेषण की गहराई में जाने के कारण, चन्द अर्थशास्त्रीयों में हेयक ही एक ऐसा अर्थशास्त्री था जिसने 1920 के दशक में एक बड़े आर्थिक संकट के खतरे का पूर्वानुमान लगाया। वास्तव में 1929 की पतझड़ ऋतु में घटित हुए भारी विध्वंस से पहले उसकी चेतावनियों का उल्लेख हो रहा था।

सामाजिक विज्ञान अनुसंधान की विभिन्न आर्थिक प्रणालियों की

व्यवहार्यता के विश्लेषण में प्रो0 हेयक का अति महत्वपूर्ण योगदान था। 1930 के दशक के मध्य से लेकर उसने सोशलिस्ट केन्द्रीय योजना की समस्याओं की ओर ज्यादा ध्यान दिया। इस क्षेत्र में और दूसरे सभी क्षेत्रों में जिनमें हेयक ने अनुसंधान किया है उसने इस क्षेत्र में विचारों और धारणाओं का एक विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया। "सोशलिस्ट परिकलन" में मूलभूत कठिनाइयों की जांच के संबंध में उसने नए पहुंच मार्ग तैयार किए और "विकेन्द्रीकृत सोशलिज़म" के माध्यम से प्रभावी परिणाम प्राप्त करने की संभावनाओं की छानबीन की।

उसके पथप्रदर्शक मानदण्ड मे विभिन्न प्रणालियों की व्यवहार्यता का मूल्यांकन करने के लिए कुशलता को निर्दिष्ट किया गया है जिसके साथ उद्यमों और व्यक्तियों के समूह में फैले हुए ज्ञान और सूचना का इस्तेमाल किया जाता है। उसका निष्कर्ष यह है कि प्रतिस्पर्धा और मुक्त मूल्य गठन के साथ किसी बाज़ार प्रणाली में दूरगामी विकेन्द्रीकरण के माध्यम से ही समस्त ज्ञान और सूचाना

का दक्ष प्रयोग प्राप्त किया जाए। हेयक दिखाता है कि ऐसी कीमतें किस प्रकार से लागत और मांग के बारे में जरूरी सूचना की वाहक होती हैं, ज्ञान और सूचना के संप्रेषण के लिए मूल्य प्रणाली किस प्रकार एक यंत्रावली होती है और ज्ञान के उच्चतर विकेन्द्रीकृत साधनों के कुशल प्रयोग के कारण यह प्रणाली किस प्रकार महत्वपूर्ण हो सकती है।

हेयक के आर्थिक प्रणालियों की व्यवहार्यता के विचारों और विश्लेषणों को कई लेखों में प्रस्तुत किया गया है और इनसे अनुसंधान के बड़े और बढ़ते क्षेत्र को महत्वपूर्ण और प्रेरक प्रेरणाएं प्राप्त हुई हैं जिसे तुलनात्मक आर्थिक प्रणालियों का नाम दिया गया है।

इस प्रकार, केन्द्रीय आर्थिक सिध्दांत में अपने कार्य के बाद, प्रो0 मायरडल और हेयक ने एक महत्वपूर्ण अन्तर्विभागीय अनुसंधान किया है। अत: रायल स्वीडिश विज्ञान अकादमी ने निर्णय लिया है कि अल्फरेड नोबेल की स्मृति में 1974 के लिए अर्थशास्त्र विज्ञान

में समान भागों में प्रो0 गुन्तार मायरडल और प्रो0 फ्रीडरिच आगस्त बोन हेयक को धन और आर्थिक उतार चढ़ावों के सिध्दांत में अग्रगामी कार्य के लिए और आर्थिक, सामाजिक और संस्थागत तथ्यों की परस्पर निर्भरता के उन सूक्ष्म विश्लेषण के लिए पुरस्कार प्रदान किया जाए।

मेरे लिए यह अत्यंत गर्व की बात है कि मैं आप दोनों को रॉयल स्वीडिश विज्ञान अकादमी की ओर से बधाई दे रहा हूँ और प्रो0 हेयक और प्रो0 वोन हेयक से कहता हूँ कि महामहिम की स्मृति में समर्पित अर्थशास्त्र विज्ञान में वर्ष 1974 का पुरस्कार प्राप्त करें।

नोबेल लैक्चर से, अर्थशास्त्र 1969-1980,

सम्पादक अस्सार लिंडबेक, वर्ल्ड साइंटिफिक पब्लिशिंग कं0 सिंगापुर, 1992